मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh ISSN:2456-2904

राजस्थान के लिए ग्वार की उपयुक्त किस्में

सोनू गेट
विद्यावाचस्पति, पादप प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर
Corresponding author's Email-sonugate79@gmail.com

राजस्थान में ग्वार की खेती का महत्व–:

दलहनी फसलों में ग्वार का विशेष योगदान है। देश के पश्चिमी भाग के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में किसानों की आय बढ़ाने के साथ ही ग्वार एक अति महत्वपूर्ण औद्योगिक भी फसल है। ग्वार एक उष्ण कटिबन्धीय पौधा है। यह सूखा सहन करने के अतिरिक्त अधिक तापक्रम को भी सह लेती है। ग्वार के फसल चक्र में इसके बाद ली जाने वाली फसल की उपज हमेशा बेहतर मिलती है। ग्वार खरीफ एवं ग्रीष्म दोनों ऋतु ही में उगायी जाने वाली एक बहु–उपयोगी फसल है। ग्वार कम वर्षा और विपरीत परिस्थितियों वाली जलवायु में आसानी से उगायी उगायी जाती है। ग्वार की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि यह उन मृदाओं में आसानी से उगायी जा सकती है जहां दूसरी फसलें उगाना अत्यधिक कठिन है। कम सिंचाई वाली परिस्थितियों में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। ग्वार की फलियों का उपयोग सब्जी के रूप में किया जाता है तथा फूल आने की अवस्था में खेत में जोत कर हरी खाद के रूप के लिए उपयोग किया जाता है। ग्वार के दानों और ग्वार चूरी को पशुओं के खाने और प्रोटीन की आपूर्ति के लिए उपयोग किया जाता है। ग्वार की फसल वायुमंडलीय नाइट्रोजन का भूमि में स्थिरीकरण करती है। आर्थिक रूप से ग्वार की खेती ग्वार के दानों से निकलने वाले गोंद के लिए की जाती है जो अधिक फायदेमंद है। टेक्सटाइल, पेपर, पेट्रोलियम, माइनिंग, कॉस्मेटिक्स, तेल, फार्मसूटिक्ल, विस्फोटक, तम्बाकू एवं खाद्य उद्योगों में ग्वार गम का उपयोग अधिकता से किया जाता है। इसलिए ग्वार की फसल का अब एक व्यवसायिक नकदी फसल के रूप में उत्पादन किया जाता है।

भारत विश्व में सबसे अधिक ग्वार की फसल उगाने वाला देश है। भारत में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात व उत्तर प्रदेश में ग्वार की खेती प्रमुख रूप से की जाती है। ग्वार के क्षेत्रफल और उत्पादन में राजस्थान देश का अग्रणी राज्य है। ग्वार राजस्थान के पश्चिम प्रदेश की अतिमहत्वपूर्ण फसल है। राजस्थान भारत के संपूर्ण ग्वार उत्पादक क्षेत्र का करीब 85 प्रतिशत एवं संपूर्ण उत्पादन का लगभग 60 प्रतिशत से अधिक उत्पादित कर रहा है। राजस्थान में 34.32 लाख हैक्टयर क्षेत्र में लगभग 12.44 लाख टन ग्वार का उत्पादन प्रतिवर्ष किया जाता है जो प्रति हैक्टेयर में 530 किग्रा औसत उपज देते है। अतः किसानो को ग्वार की उन्नत किस्मो का उत्पादन करना चाहिये ताकि उन्हें फसल से अधिक से अधिक लाभ मिल सके।

ग्वार की उन्नत किस्में एवं उनकी विशेषतायेः–

अधिकांशत ग्वार की उन्नत किस्में राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा से विकसित की गयी है। इस संस्थान ने आर जी सी–3, आर जी सी –1066, आर जी सी– 1038, आर जी सी– 1055, आर जी सी– 1031, आर जी सी–1003, आर जी सी –1002, आर जी सी 1017, आर जी सी 986, आर जी सी 936, आर जी सी 197, एम– 83 ग्वार की अधिक उपज एवं रोग व कीट प्रतिरोधी उन्नत किस्में विकसित की है। ये किस्में राज्य की अर्ध–शुष्क परिस्थितियों के लिए उपयुक्त हैं। एच जी– 365, एच जी– 563, आर जी सी– 1066 और आर जी सी– 1003 आदि दाने व गोंद हेतु, दुर्गा बहार, पूसा नवबहार और पूसा सदाबहार आदि सब्जी हेतु तथा एच एफ जी– 119, एच एफ जी– 156 आदि चारा हेतु ग्वार की उपयुक्त किस्में हैं। राजस्थान की जलवायु के लिए उपयुक्त ग्वार की अधिक उपज वाली उन्नत किस्में निम्नलिखित हैं :

आर जी सी–3 (कर्ण ग्वार) – यह भारत की प्रथम जायद हेतु उपयुक्त किस्म है जिसके पौधें की लम्बाई 57 से 98.8 सेमी. है। इसके पौधे के अधिक शाखाऐं, रोयेंदार व गहरे हरे रंग की कटाव वाली पत्तियां होती है। बीज हल्के सलेटी रंग व मध्यम आकार के होते है। फसल पकने की अवधि 86–94 दिन की है। दानो की

औसत उपज 12–15 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति सहनशील है। राजस्थान के साथ ही यह किस्म हरियाणा, पंजाब, गुजरात, मध्यप्रदेश एवं यु. पी. के लिए भी उपयुक्त है।

आर जी सी–1003 – यह किस्म राजस्थान के असिंचित क्षेत्र के लिए उपयुक्त है। इस किस्म के पौधें की लम्बाई 70 से 110 सेमी. है। इसके पौधे के अधिक शाखाऐं, रोयेंदार व गहरे हरे रंग की कटाव वाली पत्तियां होती है। बीज सफेद रंग, गोल व मध्यम आकार के होते है। फसल पकने की अवधि 95–106 दिन की होती है। दानो की औसत उपज 15–25 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति कुछ सहनशील है।

आर जी सी–1066 (लाठी) – इस किस्म के पौधे शाखाओं रहित एवं एक तने वाले होते है। यह किस्म एकल फसल व अन्तर फसल पद्धति के अनुकूलित एवं मशीन द्वारा कटाई के लिए उत्तम है। इसमें 31–32 प्रतिशत गोंद की मात्रा पायी जाती है। जायद व खरीफ की बुवाई में समान रूप से उपयोगी है। फसल पकने की अवधि 100–105 दिन की होती है। दानो की औसत उपज 10–15 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति कुछ सहनशील है।

आर जी सी– 1038 (करण) – इस किस्म के पौधे शाखित एवं कुछ सीमा तक प्रकाश के प्रति असवेंदनशील होते है। ग्रीष्म व वर्षा ऋतुओं के अनुकूलित, भरी फलियो वाली अच्छे उत्पादन की किस्म है। पतियों के किनारे कटावदार व फूल गुलाबी रंग के होते है। इसमें 31–32 प्रतिशत गोंद की मात्रा पायी जाती है। जायद व खरीफ की बुवाई में समान रूप से उपयोगी है। फसल पकने की अवधि 85–95 दिन की होती है। दानो की औसत उपज 10–20 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति कुछ सहनशील है।

आर जी सी– 1055 (उदय) – इस किस्म के पौधे बहुशाखित, पतिया गहरी कटावदार व सतह पर सफेद रोयेंदार वाली एवं फूल गुलाबी रंग के होते है। मध्यम पकने वाली यह किस्म राजस्थान व वर्षा निर्धारित क्षेत्र के अनुकूल है। इसमें 31–32 प्रतिशत गोंद की मात्रा पायी जाती है। फसल पकने की अवधि 95–110 दिन की होती है। दानो की औसत उपज 11–18 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति कुछ सहनशील है।

आर जी सी– 1031 (ग्वार क्रांति) – यह राजस्थान के सिंचित क्षेत्र के लिए उपयुक्त किस्म है। इस किस्म के पौधे की उँचाई 75–108 सेमी. तथा अत्यधिक शाखाओं युक्त होते हैंद्य पौधों पर पत्तियां गहरे हरे रंग व चौड़ी आकृति की होती है। फूल हल्के गुलाबी रंग के, फलियों की लम्बाई मध्यम व दानों का रंग सफेद मटियाला होता है।दिन में फूल आ जाते है। इसमें 29–31 प्रतिशत गोंद की मात्रा पायी जाती है। फसल पकने की अवधि 110–114 दिन की होती है। दानो की औसत उपज 10–15 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति कुछ सहनशील है।

आर जी सी 1017– यह किस्म देश के सामान्य रूप से अर्द्ध शुष्क और कम वर्षा वाले क्षेत्रों के अनुकूलित है। यह राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, यू. पी. के लिए उपयुक्त किस्म है। इस किस्म के पौधे की शाखित, पतियों के किनारे मामूली कटान होती है। फूल आने की अवधी दिन 32–36 की होती है। बीज मध्यम आकर के होते है। 92–95 दिन में फसल पक कर तैयार हो जाती है। दानो की औसत उपज 10–14 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति कुछ सहनशील है।

आर जी सी 1002– यह किस्म राजस्थान एवं गुजरात के शुष्क और कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे 60 से 90 सेंमी. ऊंचे व अत्यधिक शाखाओं युक्त होते हैं। पौधे की पत्तियां गहरी कटावदार, फूल गुलाबी रंग के होते है। भरी फलिया लगने की क्षमता अधिक होती है एवं मुख्य बीमारियों का प्रकोप कम होता है। इस किस्म के दानों में गोंद की मात्रा 29–31 प्रतिशत व प्रोटीन की मात्रा 28 से 32 प्रतिशत होती है। 80 से 90 दिन में शीघ्र पकने वाली यह किस्म, लगभग 10 से 13 क्विंटल प्रति हैक्टर तक की उपज देती है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति कुछ सहनशील है।

आर जी सी 1003– इस किस्म के पौधे शाखाओं युक्त होते हैं। कम उचाँई वाली यह फसल मध्यम अवधी 90–95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। पत्तियां गहरे रंग की त्रीपत्तिये, फूल गुलाबी रंग के एवं दाने मध्यम आकर के होते है। बीज में गोंद की मात्रा 29 से 32 प्रतिशत होती है। पैदावार 12–15 क्विंटल प्रति हैक्टर होती है।

आर जी सी 986 – देरी से पकने वाली यह किस्म राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इस किस्म के पौधों की उँचाई अधिक होती है तथा अशाखित होते हैं। पौधों की पत्तियां कम कटावदार एवं बीज मध्यम आकर के होते है। इसमें फूल देरी से आते है। फसल पकने की अवधि 110–114 दिन की होती है जो 10–15 क्विंटल प्रति हैक्टर की उपज देती है।

आर जी सी 936– यह एक साथ पकने वाली प्रकाश संवेदनशील किस्म है। इसके पौधे शाखाओं वाले झाड़ीनुमा, कम ऊँचाई वाले (85–90 सेंमी.) एवं पत्ते खुरदरे होते हैं। सफेद फूल इस किस्म की शुद्धता बनाये रखने में सहायक है। दाने मध्यम आकर एवं हल्के गुलाबी रंग के होते हैं। सबसे कम समय 80 से 110 दिन में पक कर तैयार होने वाली यह किस्म बहुत अधिक सूखा प्रतिरोधक है। यह किस्म 10–12 क्विंटल प्रति हैक्टर की उपज देती है।

आर जी सी 197 – बाजरा, मक्का एवं ज्वार के साथ अन्तर फसल पद्धति के लिए उपयुक्त है। यह अशाखित एकल तने वाली वाली किस्म है । इसके पौधे की लम्बाई 90 से 120 सेमी. होती है। दाने हल्के सलेटी रंग केहोते है एवं गोंद की मात्रा प्रतिशत पायी जाती है। यह किस्म 100 से 110 दिन में पक कर तैयार हो जाती है एवं 10–12 क्विंटल प्रति हैक्टर की उपज देती है। यह किस्म जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति सहनशील है।

आर जी एम– 112 (सूर्या ग्वार) – यह किस्म शुष्क और अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों के लिये उपयुक्त है, जिसको जायद तथा खरीफ दोनों परिस्थितयों में बोया जा सकता है। इसके पौधे शाखाओं वाले झाड़ीनुमा पत्ते खुरदरे होते हैंद्य इस किस्म के फूलों का रंग नीला, फली मध्यम लम्बी भूरे रंग की तथा दानों का रंग सलेटी होता है। यह किस्म 85 –100 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। एक साथ पकने वाली यह किस्म 10–12 क्विंटल प्रति हैक्टर की उपज देती है। यह जीवाणु व पर्ण झुलसा रोग के प्रति कुछ सहनशील है।

एच जी 2–20– ग्वार की यह किस्म वर्षा आधारित परिस्थतियों में भी अच्छी उपज देती है। इसकी पत्तियां खुरदरी, फलियाँ लंबी व दाने मोटे होते है। इस किस्म की पकाव अवधि 90–100 दिन और पैदावार क्षमता 8–9 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणु पत्ता अंगमारी, जड़ गलन तथा अल्टरनेरिया अंगमारी रोगों के प्रति सामान्यतः प्रतिरोधी है।